

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

साधन चतुष्टय



लेखक

परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी महाराज

(फतेहगढ उ. प्र.)

प्रकाशक

परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लाल साहब

आचार्य रामाश्रम सत्संग, सिकन्द्राबाद (बुलन्दशहर)

साधन चतुष्टय

साहिबो,

किसी काम में, चाहे वह दुनियाँ के मुताल्लिक हो चाहे परलोक के, तरतीब दरकार है, और तरतीब का होना बिला किसी सिद्धांत और उसूल के मुशकल ही नहीं नामुमकिन है.

जब आदमी में कोई खास कमजोरी होती है या बहुत सी कमजोरियाँ होती हैं तो कमजोरी के नुक्स को दूर करने के लिए तदबीरें करता है. तदबीरों की सूरतें मुख्य २ तो कर्म, उपासना और ज्ञान ही हैं, लेकिन इन्हीं तीनों सूरतों की हज़ारों, बल्कि अनगिनत सूरतें हो गयीं और होती जाती हैं. इन्हीं के मेल-जोल और विभाजन से हज़ारों मत-मतान्तर, पंथ और सम्प्रदाय कायम हो चुके हैं और न मालूम आगे कितने पैदा होंगे.

अब गौर करके सब सूरतों की तहकीकत (खोज) की जाए तो सिर्फ नाम और रूप तो अलग २ दिखाई पड़ेंगे, लेकिन हर सूरत में सिद्धांत और उसूल अपनी ज़ाती (मूल) और असली सूरत में छुपा हुआ मौजूद मिलेगा. और किसी फ़रीक़ को , जहां तक मेरा ख्याल है, अगर हठधर्मी को दूर कर लें, तो वह इंकार नहीं कर सकेंगे कि ज़ाती उसूलों (मूल सिद्धांतों) में कोई भेद नहीं है. हाँ, मतभेद का होना लाज़िमी (आवश्यक) है, क्योंकि हर व्यक्ति की प्रकृति और आदतें अलग २ हैं.

समझने और समझाने के लिए अगर हम लोग सिर्फ अपने ही मत के सिद्धांतों को आगे रखकर गौर और विचार करके नतीज़े को देखें तो सिद्ध हो जायेगा कि यही चौसाधन सब मज़हबों में घुसे हुए हैं और कोई फ़िरक़ा (सम्प्रदाय) इनसे बचकर नहीं जा सकता.

हिन्दुओं में वेदांत का फ़िल्सफ़ा (दर्शन) सबसे ऊँचा साबित किया गया है. सब क्रिस्म के फ़िल्सफ़ा (दर्शन) वाले बहस कर कराकर और खूब दलीलों को करके आख़िरकार इस जगह चुप होकर बैठते हैं जहां वेद का अंत हो जाता है, यानी मुरक्किब (कंपाउंड) और मिलौनी चीज़ों से परे-दर परे (बहुत दूर) पहुंचते हैं. और जहां इस मामूली कारोबारी अक्ल को दखल नहीं रहता, इस हालत को महवियत और इस्तगराकी कैफ़ियत या फ़ना या लय की अवस्था बोलते हैं. ब्रह्म-विद्या के जानने वाले इन्हीं कैफ़ियात और हालतों को द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत , द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत के नामों से पुकारते हैं. और एहले इस्लाम के सूफ़ियाये कराम (इस्लाम धर्म के सूफ़ी संत) इन्ही कैफ़ियतों को तौहीद-वजूदी, शहूदी, एहदियत, वहदत, वाहीदियत में तक्रसीम करते हैं. गरजे कि इन ऊंची हालातों पर पहुंचने के लिए जो कोशिश की जाती है वह साधनों के ज़रिये से होती है. उन साधनों की

इब्तदाई तक़सीम (प्रारम्भिक विभाजन) सिर्फ़ चार है जिनको साधन चतुष्टय कहते हैं. बिना इन साधनों के कोई अभ्यासी आखिरी मंज़िल तक नहीं पहुंच सकता.

पहला साधन

पहला साधन 'विवेक' या तमीज़ का है जिसमें हस्त और नेस्त की तमीज़ हो जाती है. इसका मतलब यह है कि इस बात का ज्ञान हो जाता है कि इस दुनियाँ में कौन २ सी चीज़ें फ़ानी या मिट जाने वाली हैं और तबदील होने वाली हैं और कौन सी चीज़ ऐसी हैं जो हमेशा कायम हैं और तबदील नहीं होतीं. इस साधन के आते ही या उसके बाद ही दूसरा साधन आ जाता है.

दूसरा साधन

इस दूसरे साधन को 'वैराग' (नफ़रत- अज़-दुनियाँ) कहते हैं क्योकि जब यह तमीज़ (ज्ञान) हो गयी कि फ़लां २ चीज़ तब्दील होने वाली है तो उससे ख़ामखाह कुदरतन (स्वाभाविक) नफ़रत पैदा होने लगेगी. तबियत का लगाव उस चीज़ से हट जायेगा और नित्य या हमेशा रहने वाली चीज़ की तरफ़ तवज्जो ज़्यादा हो जावेगी.

तजुरबा

दुनियाँ से नफ़रत या लगाव का कम हो जाना, इन तीन तरीक़ों से हो सकता है. या तो दौलत के पदार्थों को ख़ूब भोग लेने से जब पँज्ये हसरत भरा हुआ निकलता है, उस वक्त तबियत का रुझान कम हो जाता है, या रिश्तेदारों, या दोस्तों की विमुखता के साबित हो जाने पर या मौतों के हो जाने पर और अपनी मौत का नज़़ारा पेश आ जाने पर दुनियाँ से तबियत हट जाती है. लेकिन यह तबियत का हटाव पक्का और मुस्तक़िल (स्थायी) नफ़रत नहीं है, क्योकि जब तक यह चीज़ें भोग न ली जावें, उस वक्त तक वासनाओं और ख़्वाहिशों का बीज अन्दर दबा हुआ पड़ा रहता है और वक्त और सामान मिल जाने पर फिर उभर खड़े होने का अंदेशा रहता है. बिना मन मरे हुए और साफ़ हुए सच्चा वैराग पैदा नहीं हो सकता. सिर्फ़ तजुर्बा ही एक ऐसा उम्दा ज़रिया है जो असली वैराग को पैदा करता है.

अब तजुरबा और साधन की दो सूरतें जो ऊपर बयान की गयीं हैं वह सही तो हैं मगर उनका तरीक़ा व इस्तेमाल किसी पंथ ने किसी तरह पर कराया और किया है, और किसी ने दूसरी तरह पर.

वेदांत वालों ने दूसरे साधन को यानी वैराग पैदा होने के लिए यह तरतीब अखित्यार की कि पहले सिर्फ़ यह ख्याल करना शुरू किया कि माया मिथ्या और नाशवान है, और असली चीज़ ब्रह्म है. इस तरह इस ख्याल

से यह साधन शुरू किया, और इस ख्याल को इस तरह पुख्ता किया और कराया कि किसी तरह यह बात कुब्बते दिमाग और हाफिजे (स्मरण शक्ति) से हट ही न सके. लेकिन यह सिर्फ ख्याली पहलू से किया गया. असली पहलू को कोई ज्यादा दखल नहीं दिया, हालांकि असली पहलू एक तरह पर तो जरूर आ गया कि कुब्बते ख्याल के पुख्ता करने का साधन किया जो वाकई तौर पर सही है. मगर संतमत वालों ने कुब्बते तमीज़ी या विवेक शक्ति को इस तरह पर मांझा नहीं किया जैसा कि वेदांत वालों ने दिया था, हालांकि आखीर को मतलब एक ही निकलता है. संतमत वालों ने विवेक और वैराग को इस तरह पैदा किया कि तीसरे साधन यानी षट-सम्पत्ति की पहली सम्पत्ति शम (यानी तस्क्रीने क़ल्ब) को लेकर शुरुआत की, क्योंकि उन्होंने मुतवातिर और बारहा (बार-बार) तजुरबों के बाद यह नतीजा निकाला कि कुब्बते तमीज़ी या विवेक शक्ति जो सिर्फ ख्याल से ही पैदा की जाती है, वह असली तजुरबे की न होने की वजह से पुख्ता नहीं होती और यह सही है. अगर खूब गौर करके देखा जाये तो विवेक और वैराग कोई साधन नहीं है, बल्कि किसी खास साधन या साधनों के नतीजे हैं. जब तक इन्द्रियों, मन, बुद्धि चित्त को साफ़ न किया जावेगा, और मांझा न दिया जावेगा उस वक़्त तक सबसे ऊपर वाले तत्व यानी अहंकार की शक्ति किस तरह से तेज़ और साफ़ हो सकेगी ? विवेक शक्ति ख़ालिस अहंकार तत्व के मातहत है, इसलिए पहले साधन 'विवेक' को साफ़ करना, और दूसरे साधन विवेक के नतीजे 'वैराग' को संतमत वालों ने शुरू और इब्तदा में साधन नहीं कहा, बल्कि तीसरे साधन से शुरुआत कराई. अब आप गौर से इस तीसरे साधन को समझ लें.

तीसरा साधन

(षट -सम्पत्ति)

वेदांत के तीसरे साधन और संतमत के पहले साधन के ६ भाग हैं, जिनको षट-सम्पत्ति या ६ तहसीलात (शमशमादि षटक) कहते हैं. मतलब यह है कि इनसे ६ किस्म के फ़ायदे हासिल होते हैं.

पहली सम्पत्ति या हासिल का नाम 'शम' यानी तस्क्रीने क़ल्ब है जिसके मायने हैं कि दिल का ठहराव हो जावे, दिल इधर उधर न बहके, अपने केंद्र पर रहे. दिल, का ठहराव

दो तरह पर होता है - वैराग और अभ्यास से. साधू लोग अभ्यास को पहले लेते हैं, जिससे कि वैराग खुद-ब-खुद पैदा हो जाता है, लेकिन वेदांती लोग वैराग के ख्याल को मज़बूत करने को ही अभ्यास मानते हैं.

वैराग, नेति मार्ग (मनफ़्री) का तरीक़ा जानियों का है जो किसी क़दर मुश्किल है. अभ्यास, योग और उपासना सरल हैं क्योंकि ऐति मार्ग है. नेति मार्ग में हर चीज़ को जोड़ने का अमल किया जाता है और ऐति मार्ग

में कबूल और अख्तियार किया जाता है, यानी किसी खास और एक चीज़ में दिल को लगा लेते हैं। जब इस अमल से दिल एक तरफ लग जाता है तो निहायत आसानी से, बाक़ी और चीज़ों से ख़वामखाह कुदरती तौर पर दिल हट जाता है, और मुखातिब नहीं होता।

चित्त की वृत्तियाँ यानी कैफ़ियते-नफ़्स में तब्दील होती रहती हैं, नफ़्स एक हालत पर कभी क़ायम नहीं रहता। ख़यालात की उछल-कूद वग़ैरा यह सब तब्दीलियां नफ़्स की कैफ़ियात हैं। इसके अलावा चित्त की वृत्तियाँ और तरह की भी हैं, मसलन गुस्सा, शरम, नींद वग़ैरा २. इन सब कैफ़ियात की अगर जाँच -पड़ताल की जाये तो तमाम वृत्तियों की पांच किस्में हो जाती हैं.- (१) क्षिप्त (२) मूढ (३) विक्षिप्त (४) एकाग्र वृत्ति (५) निरोध.

(१) क्षिप्त-इसमें तमाम दुनियांवी ख़यालात शामिल हैं जिससे मन चंचल रहता है, मसलन भूख, प्यास, गुस्सा, रंज, इज़्ज़त, दौलत, इल्म और अमल वग़ैरा की हविस.

(२) मूढ - नींद, आलस, बेहोशी वग़ैरा

(३) विक्षिप्त - वह वृत्तियाँ हैं जो मन को ध्यान और समाधि से हटा कर बाहर की तरफ़ खेंच ले जाती हैं। मसलन ध्यान लगते वक्त बाज़ार में सौदा वग़ैरा खरीदना.

(४) एकाग्र वृत्ति - एकसुई को कहते हैं, जिसमें सब तरफ़ से तबज्जो को हटा कर सिर्फ़ एक तरफ़ लगाई जाती है.

(५) निरोध - यह वह वृत्ति है जिसमें चित्त की तमाम कैफ़ियात के रुक जाने से दिल अपनी जाती हालत पर क़ायम हो जाता है.

निरोध की हालत को पहुंचने के लिए अष्टांग योग का करना ज़रूरी है.

अष्टांग योग

योग के ८ अंग हैं-

(१)यम, (२) नियम, (३)आसन, (४) प्राणायाम, (५) प्रतिहार, (६) धारणा, (७) ध्यान और (८) समाधि.

यम के मायने रोकने के हैं, जो पांच हैं -

(१) अहिंसा, (२) सत, (३) आस्तेय, (४) ब्रह्मचर्य और (५) अपरिग्रह.

इन सबकी बाबत गौर कीजिये.

यम :- के पांच उपभाग हैं :-

(१) अहिंसा - किसी जानवर को मन, वचन, और कर्म से तकलीफ न पहुंचाना.

(२) सत - के मायने हैं सच बात कहना, सच्चा ख्याल दिल में रखना, सच्चा अमल उस पर करना, कौल और फ़ैल (वचन और कर्म) में एकसा होना, ज़ाहिर और बातिन (अन्तर-बाहर) का एक होना.

(३) आस्तेय - के मायने हैं चोरी न करना. दूसरे के माल पर निगाह न करना.

(४) ब्रह्मचर्य - के मायने हैं मन, वचन और कर्म से शहवाती जज़्बात (काम वासना) से परहेज़ करना.

(५) अपरिग्रह - के मायने हैं जो कुछ अपने पास है उसी पर सब्र करना और शुक्र करना, दूसरों के माल पर नज़र न रखना

नियम :-

नियम के मायने हैं ऐहद के. यह ऐहद करना कि ख़ास-ख़ास बातें हम ज़रूर करेंगे. यह भी पांच हैं (१) शौच - पाकीज़गी, तिहारत (२) संतोष, सब्र (३) तप (४) स्वाध्याय (५) ईश्वर प्रणिधान

(१) शौच ने तिहारत (पाकीज़गी) बदनी(शरीर की) व क़ल्बी (मन की) दोनों की ज़रूरत है.

(२) संतोष- कनायत को कहते हैं. हिर्षो-हसद (ईर्ष्या व द्वेष) से दिल को पाक और साफ़ रखना

(३) तप - भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी वग़ैरा के बर्दाश्त कर लेने का नाम है. अपने ऊपर ज़ब्र कर लेना और दूसरों को फ़ायदा पहुँचाना सबसे आला तप है.

(४) स्वाध्याय - मुताले अध्ययन को कहते हैं.

(५) ईश्वर प्रणिधान - परमात्मा पर भरोसा करने को कहते हैं. यह मसला तसलीम और रज़ा का है जिसमें अपनी मर्ज़ी को खुदा की रज़ा (रज़ामंदी) के ताबे बना देना है.

आसन :- इस तरह की बैठने की आदत डालना कि जिस्म एक हालत पर कायम रहे, हिले-डुले नहीं. इसमें इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि सीना, गरदन, ओर सिर एक लाइन में रहें, तमाम जिस्म का बोझ पसलियों पर सध जाये ओर मेरुदंड सीधा रहे.

प्राणायाम :- सांस के अमल के साधने को कहते हैं.

प्रतिहार :- के मायने तब्दीली के हैं. इन्द्रियों के ज़रिये से जो चीज़ों की मुख्तलिफ़ सूरतें दिल बनाया करता है वह न बनने देना. यह अमल तवज़्जो के रोक देने या इधर-उधर न जाने देने से हो सकता है. तवज़्जो को बार-बार हटाने के अमल को प्रतिहार कहते हैं. यह आला दर्जे का ज़बते हवास (इन्द्रिय दमन) है.

धारणा:- चित्त को सिर्फ़ एक जगह क्रायम करने का नाम धारणा है.

ध्यान:- धारणा को मुतबातिर इस तरह जारी रखने का नाम है, जिस तरह तेल की धार बराबर एक रस जारी रहती है, गोया कि धारणा एक नुक्रता है और ध्यान ख़त है.

समाधि:- नफ़्स यानी चित्त की उस हालत का नाम है जिसमें कि इल्म, आलिम दोनों का ख़याल दूर होकर, सिर्फ़ मालूमा बाक़ी रह जाता है. ध्यान में मालूम करने वाला नहीं रहता सिर्फ़ वस्तु (यानी शम) मालूमा और इल्म बाक़ी रह जाता है. समाधि में इल्म भी जाता रहता है, सिर्फ़ वस्तु (यानी शम) मालूमा बाक़ी रह जाता है गोया कि चित्त खुद शम मालूमा बन गया और कुछ बाक़ी न रहा.

अब हम इस तमाम बयान से इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि तीसरे साधन की पहली सम्पत्ति शम यानी मन की एकाग्रता यानी तस्कीन और दूसरी सम्पत्ति दम या ज़बते हवास (इन्द्रिय दमन) पहले कराया जाता है. कोई २ पंथ में तो शम यानी तस्कीने-कल्व हासिल करने के लिए सिर्फ़ कर्म का साधन कराते हैं और कोई सिर्फ़ उपासना या भक्ति-योग का और कोई इन दोनों को छोड़कर सिर्फ़ ज्ञान-योग.

लेकिन संतमत या तस्सव्वुफ़ में कर्म उपासना और ज्ञान की मंज़िलें एक साथ ही रफ़ता २ तय कराते हैं और यह सब सत्संग में एक साथ हो सकती हैं. कर्म उपासना और ज्ञान लाज़िम और मल्ज़ूम हैं. एक के वगैर दूसरे का काम नहीं चल सकता, सब साथ-साथ निहायत खूबी के साथ तय होते रहते हैं. आसनं, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि वगैरा सब एक साथ तय होते रहते हैं. इन सबके साधन में कभी तो कर्म का अंग उभरा नज़र आता है और उपासना और ज्ञान दब जाते हैं, कभी उपासना का अंग उभर आता है और कर्म और ज्ञान दब जाते हैं और कभी ज्ञान ऊपर उभर आता है और कर्म और उपासना दब जाते हैं.

अगर सिर्फ़ कर्म का अंग उभरा हुआ दिखाई पड़ता है तो उसमें दिल की यकसुई (एकाग्रता) उपासना का अंग छुपा हुआ और दबा हुआ होता है और बिना ज्ञान के कर्म और उपासना दोनों बेकार से रहते हैं. इसलिए ज्ञान का अंग भी दबा हुआ मौजूद होता है क्योंकि बिना ज्ञान के कर्म और उपासना दोनों अंड-बंड होंगे. उपासना ख़ालिस में चित्त के रोकने का अमल (कर्म) है और रुका हुआ चित्त उपासना है और इसकी तमीज़ ज्ञान है.

खालिस ज्ञान में सोचने का अमल कर्म है और किसी सोची हुई चीज़ पर ठहराव और काबू पाना उपासना का अंग है और खालिस नतीजा ज्ञान महज़ है. सत्संग में शरीक होना, इरादा करना, वचन सुनना कर्म का अंग है और सुनी हुई बातों पर मनन करना , विचार करना और साधन करना उपासना का अंग है और इन दोनों साधनों से विवेक-वैराग का पैदा होना ज्ञान का अंग है. बस लाज़िम (आवश्यक) हो गया कि अगर सत्संग में कर्म उपासना और ज्ञान वगैरा से विवेक और वैराग पैदा न हुआ तो कोई खास फायदा नहीं हुआ. थोड़ा बहुत विवेक और वैराग तो सब में पैदा हो ही जाता है, यानी तस्क्रीने-क्लब (हृदय की शांति) और एकाग्रता का भान होता है, ज़ज़्बाती कैफ़ियतों (भावुक वृत्तियों) के उभार साफ़ मालूम होते हैं . मगर असली विवेक वही है कि जिसमें अपनी कमी और नुक्स मालूम होकर पछतावा मालूम हो या दम यानी इन्द्रियां काबू में आती हुई मालूम पड़ें. अगर इन्द्रियां काबू में आयीं मालूम न हों तो उम्दा नतीजा नहीं निकला और अभ्यास ने अंदर की तरफ़ अभी क़ज़ा हासिल नहीं किया.

पांच अन्य सम्पत्तियाँ

' शम ' के अतिरिक्त पांच अन्य सम्पत्तियाँ इस प्रकार हैं:-

बाह्यइन्द्रिय वृत्तियों का निरोध करके प्रत्येक इन्द्रिय को उसके व्यापार से विमुख करना 'दम' कहलाता है. इन्द्रियों का दमन हो जाने पर विषयों की ओर उनकी पुनरावृत्ति न होने देने को उपरति कहते हैं. एक बार निरोध करने पर भी बार-बार विषयों की ओर दौड़ना इन्द्रियों का स्वाभाविक धर्म है. अतएव सदा उनकी लगाम खींचते रहना चाहिए, इसी को उपरति कहते हैं.

तितिक्षा की व्याख्या सुनिए. सर्वदा द्वन्द सहन करने की शक्ति को तितिक्षा कहते हैं. शीत-उष्ण, सुख-दुःख, राग-द्वेष इत्यादि द्वन्द कहलाते हैं. स्नान-सन्ध्यादि कर्म करते समय शीतोष्ण की जो बाधा होती है उसकी कोई परवाह नहीं, हमारा कर्माचरण सांगोपांग होना ही चाहिए ; तथा प्रारब्ध-वेग से व्यवहार में उतपन्न होने वाले सुख -दुःख हमें भोगने ही चाहिए, उनसे कोई बच नहीं सकता. इस प्रकार की शीतोष्ण, सुख-दुःखादि के सहन करने की शक्ति को तितिक्षा कहना चाहिए. पांचवा साधन समाधान है. सम्पूर्ण विषयों में सदा शांत-वृत्ति रहकर महा-वाक्य-श्रवण में अत्यंत आदर-बुद्धि रहना समाधान है. छठा साधन श्रद्धा है. उसकी व्याख्या यह है कि सद्गुरु के उपदेश ओर सत्पुरुषों के किये हुए महा-वाक्य-विवरण पर पूर्ण विश्वास रखना-उसमें संशयित बुद्धि कभी न होना श्रद्धा कहलाती है.

उपरोक्त ५ सम्पत्तियों का विस्तृत विवरण

ज्रबते-ह्वास (इन्द्रिय दमन) ओर ' दम ' की तफ़सील (व्याख्या) किताबों में बहुत तफ़सील के साथ दर्ज है, वह देखना चाहिए. हमारे यहां सत्संग में अगर जिज्ञासु या मुरीद मौदिब (गुरुमुख) हो तो बिला अभ्यास के शुरू की कुव्वते -कशफी (खेंच शक्ति) से ही विवेक, वैराग, ज्रबते-ह्वास (इन्द्रिय दमन) ओर दिल की सफ़ाई हो जाती है. मौदिब-मुरीद गुरु-मत होता है ओर बेअदब मुरीद मन-मत. असली बेअदब वह है जो दूसरी ख्वाहिशात दुनियावी (सांसारिक इच्छाओं) कोई साथ लाता है ओर अगर मुरादें (इच्छाएं) उसकी पूरी न हों तो चलता फिरता नज़र आता है. उसके इरादे निरे खुदगर्ज़ी (स्वार्थ) के होते हैं ओर फ़िदायी-मुरीद (जो गुरु को प्रेम करता हो) फ़ज़ली (जिस पर ईश्वर की कृपा होती है) होता है. वह कुछ करता धरता नहीं. फ़ज़ल (ईश्वर कृपा) से सब काम उसके सिद्ध हो जाते हैं चाहे वे इस लोक के हों चाहे परलोक के. फ़िदायी मुरीद उसको कहते हैं कि जो कुछ उसका है या उसमें है वह सब गुरु के अर्पण करके तन, मन, धन भी फ़िदा कर डालता है. फ़िदा करना न्योछावर करने को कहते हैं ओर फ़ज़ली मुरीद उसको कहते हैं कि जो कुछ उसका है या उसमें है वह सब गुरु के अर्पण करके तन, मन, धन भी फ़िदा कर डालता है. फ़िदा करना न्योछावर करने को कहते हैं. ओर फ़ज़ली मुरीद उसको कहते हैं कि उसको अभ्यास से कुछ गरज़ नहीं , ऊपर से खुद-ब-खुद अमृत की धार की बारिश उसके क़ल्ब (हृदय चक्र) पर होती रहती है. इसको ' मुराद ' भी कहते हैं. लेकिन ऐसे हज़ारों में से एक दो मुश्किल से हो सकते हैं.

अब शम, दम, दोनों से फ़ुरसत मिल गयी. अब तीसरी सम्पत्ति की बारी आती है. उसको उपरति, उपराम या सेरी कहते हैं. इसके लफ़ज़ी मायने ख़ात्मे के हैं. इल्लाह में उपरति मन की उस हालत को कहते हैं जिसमें लोक और परलोक की कोई तमन्ना नहीं रहती और उसका पूरा यकीन हो जाता है कि यह सब हेच (नाशवान) है. उपरति और वैराग में यह फ़र्क़ है कि वैराग में चीज़ों को दोष-दृष्टि से देखा जाता है और यह बुरी चीज़ है इसलिए इससे परहेज़ लाज़िम है और इसी वजह से संतमत में विवेक से पैदा हुए वैराग की हालत को गैर-मुक्क़मिल (अपूर्ण) हालत मालूम करके उसकी तरफ़ तवज्जो नहीं करते और अपना काम करते चले जाते हैं, जब तक कि मन, इन्द्रियां और बुद्धि साफ़ न हो जायें. और उपरति में इन चीज़ों को भोग कर उनसे सेर (तृप्त) होकर छोड़ देते हैं कि हमारे दिल लगाने के लायक़ नहीं है. उपरति में दुनियां के भोगों और व्यवहारों से नफ़रत पैदा हो जाती है और फिर बहिश्त-दोज़ख़ (स्वर्ग-नर्क) से और फिर किन्नर गन्धर्व, देवलोकों और प्रजापति के लोकों में जाने से बेपरवाही हो जाती है.

चौथी सम्पत्ति तितिक्षा या तहम्मूल है. यह बर्दाश्त का माद्दा है, जिसमें हर तरह के मान-अपमान की कुछ परवाह नहीं होती और हनुमान महाराज की तरह आधीनता का गुण पैदा हो जाता है.

पांचवी सम्पत्ति श्रद्धा या गुरु में विश्वास होना, और दूसरे शास्त्रों में विश्वास होना है. उससे पहले विश्वास और ऐतकाद -असली (पूर्ण श्रद्धा) मुरीदों (शिष्यों) में हरगिज़ पैदा नहीं हो सकता,. नकली ऐतकाद होता है जिसका तज़ुर्बा सालहासाल (वर्षों) से किया जा चुका है. खामख्वाह बिना गरज़ और मतलब के ऐसी मौहब्बत गुरु में हो जाना कि जिसकी वजह सोचने से भी समझ में न आवे. उस मंज़िल तक पहुंचने में न मालूम कितनी दफ़ा अभ्यासी गुरु से बद-ऐतकाद(अविश्वासी) होता रहता है, और कभी बा-ऐतकाद हो जाता है, और यह कैफ़ियत किसी एतवार के काबिल नहीं है. ख़ामोशी से गुरु उस वक्त का इंतज़ार करते रहते हैं और मुरीदों के जोश और जज़्बात के जो इज़हार होते हैं, उनको मुनासिब वक्त के आ जाने तक हूँ हाँ करते रहते हैं. एतवार कभी नहीं करते हैं. इसी मंज़िल पर शास्त्रों पर असली श्रद्धा पैदा होती है और असली मतलब उसको समझ में आने लगता है.

छठी सम्पत्ति समाधान या यकसुई है. यह आखिरी किस्म की यकसुई है, इसमें आनंद और गैर-आनंद की तरफ़ कुछ तवज्जो और दिलचस्पी बाक़ी नहीं रहती . तव्वकुल, राज़ी-व-रज़ा, मुक़ामे-हैरत, बाक़ी बा-अल्लाह होना उसके चिन्ह और अलामतें हैं.

अब चौथा साधन आता है.जिसमें मोक्ष या तलबे-निजात (मोक्ष का इच्छुक) का सवाल भक्ति की नज़र से, अमली पहलू की नज़र से, और ज्ञान की नज़र से पैदा हो जाता है.

वादए वस्ल चूँ शबद नज़दीक

आतिशे शौक़ तेज़ तर गरदद

(अर्थ: मिलाप की घड़ी जितनी नज़दीक होती जाती है उतनी ही दर्शन की आग तेज़ होती जाती है)

अब सिवाय कुर्बत (समीपता) और दीदारे-हक़ (ईश्वर दर्शन) के कोई ख्वाहिश बाक़ी नहीं रहती . जब तक यह हालत अपने ऊपर न गुज़रे, उसका समझ लेना नामुमकिन है.

इतने बयान से मुमकिन है कि हमारी मतलब बरारी, तस्क़ीने दिल (दिल की तसल्ली) के लिए हो जाये, और वहम और शक़ जो घेरे रहते हैं किसी हद तक उनका निवारण हो जाये. मेरी असली गरज़ इस बयान से यह थी कि अभ्यासी लोग यह समझ लें कि मन के ज़ज़्बात (भावनाएं) और कैफ़ियात (वृत्तियों) के समझ लेने के वास्ते विवेक पैदा हो गया लेकिन अपनी कमज़ोरी और नुक़स दिखाई नहीं देते और उनके मालूम करने में अभी काम नहीं देता है, तो यह विवेक अभी मुक़म्मिल (पूर्ण) नहीं है. जो नतीजे इन ६ किस्म की सम्पत्तियों से निकलते हैं और चौसाधनों से नतीजे पैदा होते हैं, अगर वह मालूम न हों, तो अभी रास्ता दूर है. ख्वावों ,

कैफ़ियतों, जज़बों और आनंद की अवस्थाओं से दिल को तस्सली दे देना ऐसा है जैसा कि लड़कों को तस्सली खिलौनों से हो जाती है.

असलो मक़सद (आशय) उसकी कुर्बत (नज़दीकी) और शास्त्रों और बुजुर्गों का इत्तबा क़ामिल (पूर्णतया उनके रास्ते पर चलना) का नसीब हो जाना है, और बस.

अब मैं और सब लोग उसके दरबार में प्रार्थना करें कि इस तरह काम बनाने की तौफ़ीक़ और हिम्मत हमको अता फ़रमावें (प्रदान करें).

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति

* समाप्त *